The Infinite
An International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 1 | Issue 3 | October 2024
ISSN: 3048-9539 (Online)
Website: www.theinfinite.co.in

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श : एक अवलोकन

साक्षी पाण्डेय

बी०ए० अंतिम वर्ष

एम०डी०पी०जी०कॉलेज, प्रतापगढ़, उ०प्र०

ARTICLE DETAILS

मुख्य बिंदुः

स्त्री,स्त्री विमर्श, आत्म सम्मान, यौनिकता, प्रास्थिति।

सारांश

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श एक ऐसा क्षेत्र है, जो समाज में स्त्री की स्थिति, उसकी आकांक्षाओं और संघर्षों को उजागर करता है। इस शोध–पत्र में स्त्री विमर्श के विकास, उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और साहित्य में उसके विविध पहलुओं को प्रस्तुत किया गया है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, हिंदी साहित्य में स्त्री के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता संग्राम और सामाजिक सुधार आंदोलनों ने स्त्री विमर्श को एक नया मोड़ दिया, जिससे साहित्य में स्त्री की भूमिका और अधिकारों पर ध्यान केंद्रित हुआ। इस शोध में महिला और पुरुष लेखकों, जैसे महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती, प्रेमचंद, जैनेन्द्र कुमार आदि के योगदान को शामिल किया गया है, जिन्होंने अपने साहित्यिक कार्यों में स्त्री की सामाजिक, आर्थिक और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को उभारा है। इसमें नारी स्वतंत्रता, लैंगिक भेदभाव, विवाह संस्था में स्त्री की भूमिका, और आर्थिक स्वतंत्रता जैसे विषयों पर विशेष ध्यान दिया गया है।समकालीन लेखिकाओं ने स्त्री के आत्मसम्मान, यौनिकता और समाज में उसकी अस्मिता पर गहन विचार प्रस्तुत किए हैं। यह शोध–पत्र हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के प्रभाव, चुनौतियों और संभावनाओं पर प्रकाश डालता है, साथ ही स्त्री को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए साहित्य की भूमिका को रेखांकित करता है। निष्कर्षतः, हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श समाज में स्त्रियों की स्थिति सुधारने और समानता स्थापित करने के एक प्रभावी साधन के रूप में उभर कर सामने आया है।

प्रस्तावना

स्त्री विमर्श का अर्थ है साहित्य में स्त्री से जुड़े मुद्दों पर संवाद स्थापित करना, स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण को समझना और उसकी समस्याओं को उजागर करना। स्त्री विमर्श स्त्रियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और व्यक्तिगत स्थिति में सुधार की बात करता है और समाज में उसे समान अधिकार दिलाने की दिशा में प्रयासरत रहता है।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श की शुरुआतः

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का औपचारिक रूप से उल्लेख 20वीं सदी के शुरुआती दौर में देखने को मिलता है। यह मुख्य रूप से महिला लेखकों और कवियों के माध्यम से विकसित हुआ, जिन्होंने अपनी रचनाओं में स्त्री की वास्तविक स्थिति को प्रस्तुत किया। महादेवी वर्मा, मन्नू भंडारी, और सुभद्रा कुमारी चौहान जैसी लेखिकाओं ने स्त्री के अधिकार, स्वतंत्रता, और समानता पर सवाल उठाए।

हिंदी साहित्य में स्त्री के प्रति दृष्टिकोण का बदलता स्वरूपः

प्राचीन काल में स्त्री को मुख्यतः आदर्श नारी, पतिव्रता और गृहलक्ष्मी के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि मध्यकाल में भक्ति साहित्य में स्त्रियों ने भक्ति और समर्पण का मार्ग अपनाया। आधुनिक काल में, विशेषकर स्वतंत्रता संग्राम के बाद, स्त्री जागरूकता बढ़ी और उसे साहित्य में स्वतंत्रता और अधिकारों के दृष्टिकोण से देखा जाने लगा।

स्वतंत्रता संग्राम और स्त्री विमर्शः

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई महिलाओं ने आंदोलन में सक्रिय भाग लिया, जिससे समाज में उनके प्रति दृष्टिकोण में बदलाव आया। उस समय के साहित्य में महिला पात्रों को साहसिक, देशभक्त और स्वतंत्रता की आकांक्षा से युक्त दिखाया गया। इसका प्रभाव स्त्री विमर्श की दिशा में सकारात्मक रहा।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के प्रमुख आयाम

सामाजिक स्तर पर स्त्री की भूमिकाः

हिंदी साहित्य में स्त्रियों की पारंपरिक भूमिकाओं के साथ–साथ आधुनिक युग की चुनौतियों को भी शामिल किया गया है। स्त्री का घरेलू जीवन, समाज में उसका स्थान और परिवार के प्रति उसकी जिम्मेदारियों को साहित्य में प्रमुखता से उठाया गया है।

आर्थिक स्वतंत्रता और स्त्री विमर्शः

आर्थिक स्वतंत्रता का स्त्री विमर्श पर गहरा प्रभाव पड़ा है। कई रचनाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता को स्त्री के सशक्तिकरण का साधन बताया गया है। विशेषकर आधुनिक साहित्य में आर्थिक दृष्टिकोण से स्त्री की भूमिका पर बल दिया गया है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण आयाम है – स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता। आर्थिक स्वतंत्रता न केवल स्त्री के आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता के लिए अनिवार्य है, बल्कि यह उसके संपूर्ण व्यक्तित्व और स्वतंत्रता की आधारशिला भी है। आर्थिक रूप सेस्वतंत्र होने पर स्त्री को निर्णय लेने की शक्ति मिलती है, जिससे वह अपनी जरूरतों, आकांक्षाओं और अधिकारों को स्थापित कर सकती है। हिंदी साहित्य में, विभिन्न लेखकों ने स्त्री के आर्थिक सशक्तिकरण को उसके समग्र विकास और समाज में उसकी वास्तविक पहचान का माध्यम माना है।

अनेक रचनाकारों ने अपने उपन्यासों और कहानियों में आर्थिक रूप से सशक्त स्त्री को चित्रित किया है। मन्नू भंडारी के उपन्यासों में कई ऐसी नायिकाएँ मिलती हैं जो नौकरीपेशा हैं और अपने आर्थिक अधिकारों के प्रति जागरूक हैं। उनके पात्र यह बताते हैं कि जब स्त्री अपने पैरों पर खड़ी होती है, तो उसे समाज और परिवार में सम्मान मिलता है और उसकी इच्छाओं और स्वायत्तता को महत्व दिया जाता है।

कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग जैसी लेखिकाओं ने भी आर्थिक स्वतंत्रता के महत्व पर जोर दिया है। कृष्णा सोबती के उपन्यासों में नारी पात्र अपने जीवन के निर्णय आर्थिक रूप से सक्षम होने के बाद लेती हैं। उनका साहित्य यह दिखाता है कि आर्थिक स्वतंत्रता केवल आर्थिक सुरक्षा ही नहीं, बल्कि एक मानसिक और भावनात्मक सशक्तिकरण भी देती है, जिससे स्त्री अपने जीवन के प्रति आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास से भरी होती है।

आधुनिक समाज में, जहाँ स्त्री का कार्यक्षेत्र बाहर भी विस्तृत हुआ है, आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व औरभी बढ़ गया है। समकालीन लेखिकाएँ जैसे कि अनामिका और मैत्रेयी पुष्पा ने आर्थिक सशक्तिकरण को स्त्री विमर्श में प्रमुखता से स्थान दिया है। इनके लेखन में यह दृष्टिकोण स्पष्ट है कि आर्थिक रूप से स्वतंत्र स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग होती है और समाज में अपने लिए एक सुरक्षित स्थान बनाने में सक्षम होती है।

अतः हिंदी साहित्य में स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता को स्त्री विमर्श का एक महत्वपूर्ण पहलू माना गया है,क्योंकि यह स्त्री के आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, और समाज में उसकी स्थिति को मजबूती प्रदान करता है। आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर ही स्त्री समाज की पुरानी रूढ़ियों और प्रतिबंधों को चुनौती देने की हिम्मत पाती है और अपने सपनों और आकांक्षाओं को साकार कर पाती है।

शैक्षिक एवं सांस्कृतिक विकास और स्त्री विमर्शः

हिंदी साहित्य में शिक्षा को स्त्री के जागरण का मुख्य स्रोत माना गया है। इसके माध्यम से स्त्री अपने अधिकारों के प्रति सजग होती है और आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर होती है। सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी साहित्य में स्त्री की भूमिका को चित्रित किया गया है।

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के महत्वपूर्ण रचनाकार

महिला लेखिकाओं का योगदानः

महादेवी वर्मा की कविताओं और गद्य रचनाओं में स्त्री के आत्मबल, संवेदनशीलता और सामाजिक स्थिति का वर्णन मिलता है। मन्नू भंडारी ने अपने उपन्यासों में शहरी महिलाओं की समस्याओं और उनकी इच्छाओं का सजीव चित्रण किया। कृष्णा सोबती ने अपने पात्रों के माध्यम से स्त्री की यौनिकता और आत्मनिर्भरता के मुद्दों को उठाया। मृदुला गर्ग और मैत्रेयी पुष्पा ने ग्रामीण जीवन में स्त्री के संघर्ष को उकेरा है।

पुरुष लेखकों का दृष्टिकोणः

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में नारी की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को वास्तविकता के धरातल पर उतारा। जैनेन्द्र कुमार ने नारी के आंतरिक संसार को समझने की कोशिश की, जबकि यशपाल ने स्त्री को स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में नए दृष्टिकोण से देखा। इन लेखकों की रचनाओं में स्त्री विमर्श के विभिन्न पहलू दिखाई देते हैं।

हिंदी साहित्य में पुरुष लेखकों ने भी स्त्री विमर्श को गहराई से समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इन लेखकों ने स्त्री के संघर्ष, उसकी स्वतंत्रता की चाह, और समाज में उसके अधिकारों की वकालत की है। पुरुष लेखकों का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण रहा है, और उन्होंने अपने साहित्य में स्त्री के जीवन की जटिलताओं को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों और कहानियों में स्त्री की आर्थिक और सामाजिक स्थिति का सजीव चित्रण किया। उन्होंने स्त्री को केवल घर की चारदीवारी तक सीमित पात्र नहीं बनाया, बल्कि उसे आत्मनिर्भर, साहसी और संघर्षशील दिखाया। उनकी रचनाएँ जैसे निर्मला और गोदान समाज में स्त्री की स्थिति और उसकी समस्याओं पर एक आलोचनात्मक दृष्टि प्रस्तुत करती हैं।

जैनेन्द्र कुमार ने अपने साहित्य में स्त्री की आंतरिक चेतना, उसकी इच्छाओं और मनोविज्ञान पर गहन विचार किया। उनके उपन्यास त्यागपत्र में स्त्री के अधिकार और उसकी स्वतंत्रता की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। जैनेन्द्र के पात्र पुरुष प्रधान समाज में स्त्री की अस्मिता और उसकी स्वतंत्रता की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

यशपाल ने स्त्री को एक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर व्यक्ति के रूप में देखा। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री को समाज की परंपराओं और बंधनों से मुक्त दिखाने की कोशिश की। उनकी रचना दिव्या में स्त्री का साहसी और स्वतंत्र

ष्टिकोण सामने आता है। यशपाल ने स्त्री को केवल मातृत्व और पत्नीत्व तक सीमित नहीं किया, बल्कि उसे एक सक्षम और निर्णय लेने वाली इकाई के रूप में प्रस्तुत किया।

रामधारी सिंह दिनकर और सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जैसे कवियों ने भी अपनी कविताओं में स्त्री की स्वतंत्रता और अधिकारों की बात की है। दिनकर ने स्त्री को केवल सौंदर्य का प्रतीक न मानकर एक शक्ति के रूप में देखा, जबकि अज्ञेय ने स्त्री की आंतरिक सुंदरता और संघर्ष को अपनी कविताओं में उभारा।

पुरुष लेखकों का दृष्टिकोण यह दिखाता है कि वे भी स्त्री के अधिकारों, उसकी स्वतंत्रता और अस्मिता की जरूरत को पहचानते हैं। उनके साहित्य में स्त्री के संघर्षों के प्रति सहानुभूति, सम्मान और समाज में बदलाव की प्रेरणा दिखाई देती है।

स्त्री विमर्श के प्रमुख मुद्दे

नारी स्वतंत्रता और सशक्तिकरणः

स्त्री की स्वतंत्रता और सशक्तिकरण पर हिंदी साहित्य में विभिन्न रचनाओं के माध्यम से जोर दिया गया है। कई लेखकों ने स्त्री की स्वतंत्रता को एक महत्वपूर्ण मुद्दा माना और उसके लिए समाज में बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया।

लैंगिक भेदभाव और समानताः

हिंदी साहित्य में लैंगिक भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई गई है। स्त्री को पुरुष के समान अवसर और अधिकार प्रदान करने की दिशा में साहित्य में अनेक दृष्टांत मिलते हैं। कई रचनाओं में समानता के प्रति स्त्री की आकांक्षाओं को बखूबी दर्शाया गया है।

विवाह संस्था और स्त्रीः

विवाह संस्था में स्त्री की स्थिति को लेकर भी कई साहित्यकारों ने सवाल खड़े किए हैं। विवाह संस्था के अंदर स्त्री के अधिकार, स्वतंत्रता और उसकी इच्छाओं को साहित्य में प्रमुखता से प्रस्तुत किया गया है। हिंदी साहित्य में विवाह संस्था को स्त्री के संदर्भ में एक जटिल और बहुआयामी दृष्टिकोण से देखा गया है। विवाह एक सामाजिक और सांस्कृतिक संस्था है, जिसका उद्देश्य पुरुष और स्त्री को एक परिवार के रूप में जोड़ना है, लेकिन कई रचनाओं में यह प्रश्न उठाया गया है कि यह संस्था स्त्री के लिए एक बंधन क्यों बन जाती है। विवाह के माध्यम से स्त्री की भूमिका, अधिकार और स्वतंत्रता पर अनेक तरह के सवाल उठते हैं, जिन्हें हिंदी साहित्य ने समय–समय पर उभारा है।

प्रेमचंद जैसे लेखकों ने विवाह संस्था में स्त्री की स्थिति का यथार्थ चित्रण किया। उनके उपन्यास निर्मला में विवाह संस्था के तहत स्त्री की इच्छाओं और उसकी स्वतंत्रता का दमन दिखाया गया है। विवाह के बंधन में बंधी स्त्री की समस्याएँ और उसका आंतरिक संघर्ष इस रचना में प्रमुखता से सामने आता है।

मन्नू भंडारी और कृष्णा सोबती जैसी लेखिकाओं ने विवाह संस्था पर खुलकर प्रश्न उठाए हैं। मन्नू भंडारी के उपन्यासों में स्त्रियाँ अपनी शादीशुदा जिंदगी में स्वतंत्रता और आत्मसम्मान की खोज करती हैं। उनकी रचना आपका बंटी में

विवाह में स्त्री–पुरुष के संबंधों की जटिलता और उसके बच्चों पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया गया है। कृष्णा सोबती के उपन्यास मित्रो मरजानी में विवाह में स्त्री की यौन इच्छाओं को लेकर खुलापन दिखाया गया है, जो परंपरागत विवाह संस्था को चुनौती देता है।

विवाह संस्था में स्त्री के अधिकार और उसकी स्वतंत्रता पर ध्यान देने वाली लेखिकाओं में मृदुला गर्ग और मैत्रेयी पुष्पा का योगदान भी उल्लेखनीय है। मृदुला गर्ग ने विवाह में स्त्री की भूमिका पर सवाल उठाते हुए यह दिखाया है कि कैसे विवाह केवल समाज की एक औपचारिकता बन कर रह जाती है, जबकि मैत्रेयी पुष्पा ने विवाह के बाद स्त्री के संघर्ष, उसकी आर्थिक निर्भरता, और सामाजिक दबावों को उकेरा है।

आधुनिक हिंदी साहित्य में विवाह संस्था का एक नया स्वरूप उभर कर आया है। यहाँ स्त्रियाँ विवाह के भीतर और बाहर दोनों ही स्थितियों में अपने आत्मसम्मान, स्वतंत्रता, और अधिकारों की तलाश करती हैं। वे विवाह को अपनी पहचान का हिस्सा तो मानती हैं, लेकिन साथ ही, अपने आत्मसम्मान और स्वतंत्रता के प्रति भी सजग हैं।

अतः हिंदी साहित्य में विवाह संस्था के माध्यम से स्त्री विमर्श को गहराई से समझने की कोशिश की गई है। यह दृष्टिकोण समाज की उन धारणाओं को चुनौती देता है जो विवाह को स्त्री का अंतिम उद्देश्य मानती हैं। इसके माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री के लिए विवाह केवल सामाजिक या पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि उसके अधिकारों और उसकी स्वतंत्रता का भी सवाल है।

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श

आधुनिक दौर में स्त्री विमर्श के नए आयाम और चुनौतियाँः

वर्तमान समय में स्त्री विमर्श के विषय अधिक समृद्ध हुए हैं। अब स्त्री विमर्श केवल समानता और अधिकारों तक सीमित नहीं है, बल्कि यौनिकता, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर भी केंद्रित है।

समकालीन लेखिकाओं का दृष्टिकोणः

वर्तमान लेखिकाएँ स्त्री विमर्श को नए दृष्टिकोण से देखती हैं और इसके माध्यम से स्त्री की अस्मिता, संघर्ष और समाज में उसके वास्तविक स्थान को उजागर करती हैं। ये लेखिकाएँ समाज में व्याप्त परंपरागत सोच को चुनौती देकर स्त्री के जीवन के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत कर रही हैं।

समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श का स्वरूप पहले से कहीं अधिक विस्तृत और बहुआयामी हो गया है। आधुनिक लेखिकाएँ अब केवल पारंपरिक मुद्दों जैसे घरेलू जीवन या मातृत्व तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने स्त्री की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता, यौनिकता, अस्मिता, और समाज में उसकी वास्तविक स्थिति जैसे संवेदनशील और अक्सर विवादित मुद्दों को भी अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है। इनके लेखन में स्त्री की अपनी पहचान, उसकी आकांक्षाओं और उसकी सीमाओं को चुनौती देने की प्रेरणा स्पष्ट दिखाई देती है।

मैत्रेयी पुष्पा जैसी लेखिकाएँ अपने उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश में रहने वाली स्त्रियों की कठिनाइयों, सामाजिक रूढ़ियों और पुरुष प्रधान समाज में उनकी अस्मिता की तलाश को बेबाकी से उभारती हैं। उनके लेखन में स्त्री का अपने

अधिकारों के प्रति सजग और संघर्षशील रूप सामने आता है। मृदुला गर्ग ने समाज के बंधनों और परंपराओं में जकड़ी स्त्री को विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठकों को स्त्री के आंतरिक संघर्ष को समझने में मदद मिलती है।

गीतांजलि श्री और अनामिका जैसी लेखिकाएँ स्त्री की यौनिकता और उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं पर खुले विचार प्रस्तुत करती हैं। उनके लेखन में स्त्री को एक स्वतंत्र इकाई के रूप में देखा गया है, जो समाज की अपेक्षाओं से मुक्त होकर अपनी आकांक्षाओं का पीछा करती है। इन लेखिकाओं का दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श अब केवल समानता तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह स्त्री की आत्मनिर्भरता और स्वायत्तता के अधिकार की भी मांग करता है।

समकालीन लेखिकाओं का दृष्टिकोण न केवल स्त्री के संघर्षों को उजागर करता है, बल्कि यह समाज में व्याप्त स्त्री विरोधी धारणाओं को चुनौती देकर परिवर्तन की प्रेरणा भी देता है। उनके लेखन में यह विश्वास झलकता है कि स्त्री केवल समाज की सहायक नहीं, बल्कि एक स्वतंत्र और सक्षम अस्तित्व भी है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श ने समाज में स्त्री की स्थिति पर गहरा प्रभाव डाला है। साहित्य के माध्यम से स्त्रियों ने अपने अधिकारों और स्वतंत्रता की मांग की है और समाज में अपनी पहचान बनाई है। स्त्री विमर्श का अध्ययन हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज में समानता लाने के लिए किस प्रकार साहित्य ने एक सशक्त माध्यम के रूप में काम किया है। भविष्य में भी स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए रखेगा और समाज को नई दिशा देने का कार्य करेगा।

सन्दर्भ

1. भंडारी, मन्नू. (1971). आपका बंटी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन.
2. प्रेमचंद, धनपतराय श्रीवास्तव. (1925). निर्मला. लखनऊः सरस्वती प्रेस.
3. सोबती, कृष्णा. (1966). मित्रो मरजानी. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन.
4. गर्ग, मृदुला. (1980). चित्तकोबरा. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन.
5. पुष्पा, मैत्रेयी. (2000). इदन्नमम. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन.
6. श्री, गीतांजलि. (2013). हमारा शहर उस बरस. नई दिल्लीः राधाकृष्ण प्रकाशन.
7. वर्मा, महादेवी. (1983). महादेवी समग्र. नई दिल्लीः लोकभारती प्रकाशन.
8. कुमार, जैनेन्द्र. (1937). त्यागपत्र. इलाहाबादः किताब महल.
9. यशपाल, सिंह. (1945). दिव्या. लखनऊः सरस्वती प्रेस.
10. वात्स्यायन, सच्चिदानंद हीरानंद. (1951). भविष्य के गर्भ में. नई दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ.